H.CO
08/07/21.

Date
Page 20

अतिथि तुम कब जाओगे पाठ का सारांश 80-100 शब्दों में अपने गृह कर्म कॉपी में लिखिए।

लेखक के घर में अतिथि आए हैं। उस आये हुए अतिथि के सेवा-सत्कार में लेखक और उनकी पत्नी ने अपनी ओर से कोई कमी नहीं की है। यह सेवा-सत्कार इसलिए किया गया है कि अतिथि आने के बाद तुरंत चले जाए। परंतु यह अतिथि नहीं जा रहे हैं लेखक को अब शंका हो रही है कि अतिथि अब न जाने कितने दिन और रुकेंगे। लेखक अतिथि के थोड़े दिन और रुक जाने की आशंका से डर ही रहे थे कि अतिथि ने और कुछ दिन रुक जाने का संकेत दे दिया। अतिथि ने अपने कपड़े गंदे होने की बात कही और उस गंदे कपड़े को धुलाई के लिए धोबी को देने की चर्चा की। लेखक को इस बात से गुस्सा तो बहुत आया लेकिन लॉण्ड्री से कपड़े धुलाकर लाना ही सही समझा। लेकिन अब भी अतिथि वहाँ से चले जाएँगे, इसकी कोई गारंटी न थी लेखक और उनकी पत्नी अतिथि से बहुत परेशान हो चुके थे। कल तक जो अतिथि देवता समान था, वो आज दानव के समान बन चुका था। सम्मान माँगने से नहीं मिलता बल्कि सम्मानित व्यक्ति के साथ जैसा आचरण किया जाता है तब उस व्यक्ति के व्यवहार से मुग्ध होकर अन्य लोग स्वयं ही उस व्यक्ति को सम्मान देते हैं। लेखक ने एक और बात बतायी है कि दूसरों के घर में रहकर आदर-सत्कार प्राप्त करना सभी को अच्छा लगता है। इसका मतलब यह नहीं है कि सभी

लोग अपना घर छोड़कर दूसरे के घर में ही रहना शुरू कर दें। लेखक ने यह भी बताया है कि अतिथि के घर इज्जत मिलने का यह मतलब नहीं कि इज्जत जहाँ मिले, वहाँ सिर चढ़ जाए। इज्जत कभी भी माँगने से प्राप्त नहीं होती है। यदि अतिथि को बिना माँगे इज्जत चाहिए तो उन्हें यह सावधानी बरतनी होगी कि थोड़े ही समय में ही किसी के घर का दरवाजा छोड़ दें। यह व्यंग्य-रचना सही मायने में महमान और मेज़बान की संयुक्त आचार संहिता है।